28 / 01 / 80 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सम्पूर्ण ब्रह्मा समान
सम्पूर्ण ब्राह्मण स्वरूप की अनुभूति

➢➢ मैं आत्मा सूक्ष्म वतन में अपने डबल स्वरूप को देख रही हूँ - एक वर्तमान पुरुषार्थी स्वरूप, दूसरा वर्तमान जन्म का अंतिम सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप।

➳ _ ➳ मैं आत्मा इस समय "हम सो, सो हम" के मंत्र में पहले हम सो फरिश्ता स्वरूप फिर भविष्य में हम सो देवता रूप को देख रही हूँ।

→ मैं आत्मा अपने अंतिम फरिश्ता स्वरूप को इमर्ज करती हूँ।

→ फिर साकार ब्रह्मा और सम्पूर्ण ब्रह्मा के अंतर को देखती हूँ।

→ फिर मैं आत्मा नीचे अपने तपस्वी रूप को देखती हूँ और ऊपर खड़ा हुआ फरिश्ता रूप को देखती हूँ।

■ सम्पूर्ण ब्रह्मा को देखते हुए सम्पूर्ण ब्राह्मण स्वरूप की अनुभूति कर रही हूँ।

■ फरिश्ता स्वरूप बहुत बड़े सर्कल के रूप में राज्य दरबार के रूप में इमर्ज हो रहा है।

■ विशेष चमकता हुआ रूप, मस्तक के बीच मे चमकती हुई मणी के रूप में आत्मा दिखाई दे रही है।

■ आत्मा की चमक और लाइट का विस्तार दूर तक फैल रहा है।

➢➢ मैं नॉलेजफुल त्रिकालदर्शी स्थिति का अनुभव कर रही हूँ।

➳ _ ➳ ज्ञान, गुण और शक्तियों को ग्रहण करती जा रही हूँ।

→ शांतिदाता स्वरूप स्थिति की अनुभूति कर रही हूँ।

■ स्वचिन्तक और शुभचिंतक बनती जा रही हूँ।

■ शुभचिंतक स्थिति द्वारा गुण ग्राही बनती जा रही हूँ, मेरी गुणों को ग्रहण करने की शक्ति बढ़ रही है।

■ माया प्रूफ बनती जा रही हूँ।

➢➢ बापदादा द्वारा फाइनल माला बनाने के मनकों में शामिल होता हुआ देख रही हूँ।

➳ _ ➳ ब्रह्मा बाप समान स्थिति का अनुभव कर रही हूँ।

→ वाह: मेरा भाग्य, सम्पूर्ण स्वरूप सफलता की माला मेरे गले के नज़दीक आती जा रही है।

→ सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप स्थिति की अनुभूति कर रही हूँ।

■ हम सो फ़रिश्ते से हम सो देवता बन रहे है।

■ स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन करने वाली मैं विश्व-कल्याणकारी आत्मा बन गयी हूँ।